ASSIGNMENT REFERENCE MATERIAL (2019-20)

A.T.R.-01

TRANSLATION

Q1. Translate the following prose piece into Hindi.

निम्नलिखित गद्यांशों का हिंदी में अनुवाद करें।

I could never forget the way Mariamma was humiliated in front of the entire village. The more I thought about it, the more I felt sorry for her. And although I was filled with pity on the one hand, I was filled with anger on the other. If only they had allowed the other women who had gone to collect firewood with her to speak out at the assembly, all the lies and the truth would have come out. Why were women pushed aside always and everywhere? The question kept on churning inside me.

Patti could have spoken out at the village council: after all, she was present at most households whenever a child was born; she was an overseer of women workers; she was an important woman. It was the smaller children and young girls who could not be expected to speak out. Telling myself this, I accosted Patti. 'Patti,' I said, 'after all, you are a big woman in this village, why couldn't you have gone and spoken the truth that day?'

उत्तर– पूरे गाँव के सामने मरियम्मा को जिस तरह से अपमानित किया गया, उसे मैं कभी नहीं भूल सकूंगा। जितना मैंने उस महिला के बारे में सोचा, उतना ही मुझे उसके लिए अफसोस हुआ। एक तरफ जहाँ मुझे उसे अबला महिला पर दया आ रही थी, वही जो लोग उससे यह काम करवा रहे थें उन पर घृणा आ रही थी। यदि सिर्फ बाकी-सब औरतों को जो उस महिला के साथ जलावन की लकड़ी चूनने गई थी, तो वहाँ पर बोलने का मौंका दिया गया होता तो उसका झूठ सबके सामने खुल जाता। मतलब दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता। महिलाओं को हमेशा हर जगह क्यों धकेल दिया जाता है। मेरे मन के अंदर यह सवाल चलता रहा।

गाँव परिषद में पट्टी की बात की जा सकती थी: आखिरकार, जब भी बच्चे का जन्म हुआ , वह ज्यादातर घरों में मौजूद थी; वह महिला श्रमिकों की देखरेख करने वाली थी; वह एक महत्वपूर्ण महिला थी। यह छोटे बच्चे और युवा लड़कियाँ थीं जिनसे बात करने की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। खुद को यह बताते हुए मैंने पैटी को एक्सेप्ट किया। 'पट्टी, 'मैंने कहा,' आखिरकार, आप इस गाँव की बड़ी महिला हैं, आप उस दिन क्यों नहीं गए और सच बोला? '

Q2. Translate the following prose into English.

निम्नलिखित गद्यांशों का अंग्रेंजी में अनुवाद कीजिए।

चलते–चलते वह राजकुमार एक ऐसी जगह पर जा पहुँचा जहाँ कुछ लोग किसी बात का फैसला करने हेतु इकट्ठे थे। उन्हें देखकर वह राजकुमार भी उस जगह जा पहुँचा और चुपचाप पंचों की बातें सुनता रहा। फैसला एक युवक के किसी गुनाह के बारे में किया जा रहा था, जिस पर निर्णय हुआ कि उस युवक को फाँसी दे दी जाए; किंतु, उस राजकुमार को पंचों का वह निर्णय पसंद नहीं था। अतः, उसने (राजकुमार ने) पंचों से निवेदन किया कि मैं तो एक दूरस्थ स्थान से यहाँ आ पहुँचा हूँ और पंचायत में हुई सारी बातें मैंने सुनी हैं। यदि आप लोग मुझे इजाजत दे तो मैं आप लोगों के निर्णय पर अपना विचार आप लोगों के समक्ष रखूँ। उस लड़के (राजकुमार) का चेहरा–मोहरा देखकर और उसकी बात सुनकर पंचों को लगा कि वह कोई विचारवान लड़का है। इसलिए पंचायत के लोगों ने उसे अपनी बात कहने की इजाजत दे दी।

तब, उस राजकुमार ने कहा, "मैंने सारी बातें आदि से अंत तक सुनी हैं। मेरे विचार में जिस युवक को फाँसी की सजा सुनाई गई है वह सजा उचित नहीं है। छोटी–मोटी भूल तो लोगों से हो ही जा सकती है; परंतु, इस युवक से जो भूल हुई है उसके लिए इसे फाँसी नहीं दी जानी चाहिए, बल्कि इसे यह चेतावनी देकर छोड़ दिया जाना चाहिए कि भविश्य में यह कोई ऐसी भूल न करें।"

Ans:- While walking, that prince reached at a place where some people were gathered in a Panchayat to decide the fate of a wrongdoer. Seeing them, that prince also reached at that place and kept listening silently to the Panchas. The decision was being made about a crime of a young man. It was decided unanimously that the perpetrator of the crime(that young man) should be hanged till death. However, that prince did not appreciate the decision of that of Panchas.

So, he (the prince) asked the Panchas, "I have come here from a remote place and I have heard all the arguments and counter-arguments of the Panchayat". If you allow me, I should give my opinion on the decision of your people. Seeing the face of that boy (Prince) and listening to him, Panchas thought that he was a thoughtful boy. Therefore, the people of the Panchayat allowed him to speak.

Then, the prince started telling, "I have heard all the things from the beginning till the end. In my view, the young man who is sentenced to death is not justified. We all make mistakes. No one is infallible. Here, the important thing to understand is What is the nature of crime? What is the motive of the crime? Is the boy criminal by nature? Does he keep on committing crimes? Etc. Etc. But, after hearing his nature of crime, his clean background, not being indulged in any crime previously have made me convinced that his crime does not warrant taking his life. However, he should be given stern warnings with grave consequences, if he does the same mistake ever again.

Q3. Write short notes on:

संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए

a) Denotative Meaning

Ans:- Denotative meaning of a word refers to the literal meaning which is defined in a dictionary. It is the basic meaning of a word, which is precise, literal and objective; and appeals to rational and logical thought process. Denotative meaning is unambiguous and factual. Dictionaries generally give the denotative meaning in a prime ranking order. Thus,

they tend to occur in factual types of writing such as some textbooks, scientific and technical reports, instruction manuals, encyclopaedias, dictionaries and so on. These words carry no emotional overtones. It simply describes the object, person, place, idea or event to which the word refers. These are texts in which meaning is organised at the most obvious level.

For example:

'Most trees shed their leaves in autumn.'

In such a text, the meaning of almost all the words is obviously clear and not subject to any controversy. The statement refers to the phenomenon of trees giving up their leaves during a particular season, namely autumn. This is its meaning or message and one would generally not try to read any other meaning in this sentence. This is its 'literal' meaning.

Sometimes a word is used in a manner that its meaning is not immediately clear.

For example:

'He is a fox.'

Here, the word 'fox' has been used in a different manner. When we say, 'He is a fox', we are not using 'fox' in the sense of an animal which is its literal meaning but in the sense of its qualities of being clever and deceptive. These qualities are generally associated with the animal 'fox'. So the meaning of the sentence 'He is a fox' is that he is clever and deceptive like a fox. This meaning is called its figurative meaning.

अभिधार्थ

उत्तर– ***अभिधार्थ (Denotative Meaning)***–सामान्यत: कई ऐसे पाठ होते हैं, जिनका अर्थ स्पष्ट पता चलता है, साथ ही वे इस ढंग से व्यवस्थित भी होते हैं, जो अधिक अर्थ न व्यक्त करके सिर्फ एक ही अर्थ व्यक्त करते हैं।

उदाहरणार्थ–

'Most trees shed their leaves in autumn.'

इस प्रकार के वाक्य में हर शब्द का अर्थ लगभग स्पष्ट है और इसमें विषय के संबंध में कोई विवाद नहीं। यह कथन "पतझड़" (autumn) के नाम से ज्ञात विशिष्ट मौसम में पेड़ों द्वारा पत्तियाँ गिराने जैसी घटना से संबंधित है। यही इस वाक्य का अर्थ अथवा भाव है। सामान्यत: कोई भी व्यक्ति इस वाक्य का कोई अन्य अर्थ न निकालकर केवल यही अर्थ समझेगा। यह इस वाक्य का "शाब्दिक" अर्थ है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी शब्द को इस प्रकार प्रयुक्त किया जाता है कि उसका अर्थ एकदम स्पष्ट नहीं हो पाता।

उदाहरणार्थ–

'He is a fox.'

जब हम कहते हैं कि 'He is a fox' तो इसका यह अभिप्राय नहीं है कि वह पशु 'fox' है। शाब्दिक अर्थ में इसका भाव पशु के संदर्भ में लिया जाएगा, जबकि इस वाक्य में 'fox' से अभिप्राय उस (व्यक्ति) में चतुर और कपटी गुण होने से है। सामान्यत: इस प्रकार के गुण "लोमड़ी" (fox) जानवर में पाए जाते हैं। इसलिए इस वाक्य He is a fox का अर्थ है कि वह (व्यक्ति) लोमड़ी की तरह चतुर और कपटी है। यह अर्थ अथवा भाव इस प्रकार के वाक्य के लक्ष्यार्थ के नाम से भी जाना जाता है।

b) Untranslatability

Ans. Translation refers to the transference of the meaning of the message from one language to another. This meaning is liquid in nature. It changes over a period of time. It is never in isolation, but always in a context and culture gives it this context. Language imbibes the changing meanings of the words. The translator has to struggle with the lack of total equivalence–both the linguistic and the cultural. It is possible that we may find cultural equivalents but not the linguistic ones or vice versa. This results in the problem of untranslatability.

By 'untranslatability', we mean two things:

- linguistic and non-linguistic elements of the original text (SL) which are absent from the target language and culture (TL).

- non-communication of the information about the functionally relevant elements of the original text to the reader of the translated text.

Catford (1965) classifies two types of untranslatability–linguistic and cultural.

अन् – अनुवादेयता

उत्तर– अन-अनुवादेयता से तात्पर्य है–

(1) मूल पाठ (स्रोत भाषा) के भाषिक और अभाषिक तत्त्व जो लक्ष्य भाषा और सांस्कृतिक स्वरूप में विद्यमान न हों।

(2) अनुवादित पाठ के पाठक को मूल पाठ के कार्यात्मक रूप से संबंधित तत्त्वों के बारे में सूचना का संप्रेषण न होना।

(1) भाषिक अन-अनुवादेयता (Linguistic Untranslatability)

(क) शाब्दिक अन-अनुवादेयता (Lexical Untranslatability)–इसका अभिप्राय उन "अंतरालों" से है, जिन्हें लक्ष्य भाषा मूल पाठ की शब्दावली के संबंध में दर्शाती है। कोई भी व्यक्ति वनस्पति और पेड़-पौधे/वनस्पति (flora and fauna), भौतिक वस्तुएँ, जैसे कपड़े, भोजन, बर्तन आदि से संबंधित शब्द मालूम कर सकता है–जो एक भाषा (स्रोत भाषा) के प्रयोग करने वाले लोगों के रहन-सहन का अंग होते

हैं, परंतु किसी दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) के प्रयोग करने वाले लोगों का नहीं। ऐसी वस्तुओं को दर्शाने वाले शब्दों का अनुवाद नहीं हो पाता।

प्रेमचंद द्वारा लिखी गईं दो कहानियों से लिए गए कुछ ऐसे ही शाब्दिक पदार्थ इस प्रकार हैं–

(i) कुल्हड़ (ii) पत्तल (iii) रायता (iv) घी

(v) कचौड़ी (vi) पूरी (vii) सौंठ (viii) (रसेदार) तरकारी

(ix) हांडी (x) थाली (xi) बटुली (xii) कलछुली

(xiii) पान–इलायची

(ख)संरचनात्मक (व्याकरणिक) अन-अनुवादेयता (Structural Untranslatability)–इसका तात्पर्य किसी स्रोत भाषा की उन व्याकरणिक संरचनाओं से है, जो वाक्य-रचना की दृष्टि से मूल पाठ के अनुरूप होती हैं, परंतु लक्ष्य भाषा में अंतर होने के कारण अनुवादित पाठ में उन्हें आत्मसात् करना असंभव होता है। यहाँ हिंदी में रचित एक कविता (स्रोत भाषा) की कुछ पंक्तियाँ ली गई हैं, जिनका अज्ञेय द्वारा अंग्रेजी में अनुवाद किया गया–

स्रोत भाषा	**लक्ष्य भाषा**
मैंने देखा, एक बूँद	I saw, a drop
मैंने देखा	I saw
एक बूँद सहसा	A drop suddenly

उछली सागर के झाग से Fly from the sand of the sea.

(2) सांस्कृतिक अन-अनुवादेयता (Cultural Untranslatability)–भाषा और संस्कृति परस्पर जुड़े हुए हैं और एक को दूसरे से अलग करना कठिन है, अर्थात् हमें भाषा में परिस्थितिपरक विशेषताएँ मिलती हैं, जो कार्यात्मक रूप से अपने समाज के सांस्कृतिक पक्ष से जुड़ी होती हैं। सांस्कृतिक अन-अनुवादेयता तब होती है, जब स्रोत भाषा पाठ के लिए कार्यात्मक रूप से महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक विशेषताएँ उस संस्कृति में विद्यमान नहीं होतीं, जिसका लक्ष्य भाषा एक भाग होती है। इसमें शिल्प-पक्ष के सांस्कृतिक मूल्यों, संस्कृति की विशिष्ट सामाजिक प्रथाओं, धार्मिक रस्मों, रीति-रिवाजों, परंपराओं आदि का वर्णन होता है। यह उस विशेष भाषिक समुदाय के वाचिक व्यवहार को मूल्यबद्ध दिशा में नियंत्रित करता है, अर्थात् किसी के प्रति विनम्र या आक्रामक कैसे बना जाए।

c) Iconic Sign

Ans. An iconic sign ("hypoicon") is anything whatever which does or can function as a sign in virtue of its embodiment of some icon proper. An iconic sign, or icon, (from Greek eikon 'replica') provides a visual, auditory or any other perceptual image of the thing it stands for. An iconic sign is similar to the thing it represents. The road sign warns drivers to look out for children near a school pictures two or three children crossing the road on a zebra crossing. The image is of course only vaguely similar to reality since, at a particular moment, only one or any number of children may be running across the street, but its general meaning is very clear nevertheless. The idea of danger caused by animals on roads is also pictured by iconic signs such as images of cows, deer, geese, horse, toads, etc. Pictures of lorries, cars, tractors, cycles, cycling paths, rivers, bridges, falling rocks, bends in the road, hairpin bends, etc. are usually represented iconically. The above-mentioned gestural drawing of a woman's shape with one's hands or the tracing of a spiral staircase with one's finger are, of course, also iconic signs.

प्रतिमापरक प्रतीक

उत्तर: कुछ ऐसे ध्वनि संकेत होते हैं, जिनके अनुसार उनकी सांकेतिक वस्तु को नाम दिया जाता है। कई बार अनुकरण ध्वनि के द्वारा भी बिंब बनता है, जैसे–भोंपू, फटफटिया तथा डुगडुगी आदि। भूषण की कविता और निराला के काव्य में युद्ध का जो चित्रण हुआ, वह उसका नैसर्गिक गुण है।

इंद्र जिमि जंभ पर, बाड़व सुअंभ पर
रावन संदर्भ पर, रघुकुल राज है।

इसमें अनुवाद में कठिनाई हो सकती है। वास्तव में इसमें भाषा का प्रतिमापरक गुण नहीं आ पाता। जैसे अंग्रेजी में **flip, flap, flitter** एवं **flimmer** शब्दों के क्रम में अथवा **glare, glitter** तथा **glow** के क्रम में **i** ध्वनि उच्च अग्रस्तर है जो तेज और चमकदार की प्रतीति कराती है और **o** ध्वनि निम्न पश्च स्वर है जो भद्दे या भारी भरकम का द्योतक है, लेकिन लक्ष्य भाषा में इन ध्वनियों से उसी प्रकार के भाव की अपेक्षा नहीं कर सकते। इसी प्रकार हिंदी कविता में अनुप्रास अलंकार जैसे तत्त्वों का अनुवाद कर पाना दुष्कर कार्य है। अर्थात् प्रतिमापरक प्रतीकों से अभिप्राय सादृश्य के आधार पर बने प्रतीकों से है। उदाहरण के लिए, जब हम किसी चित्रकार अथवा छविकार द्वारा निर्मित किसी व्यक्ति विशेष का कोई चित्र या छवि–चित्र देखते हैं तो सादृश्य के आधार पर अपेक्षित संकेतार्थ हो उठता है। इसी प्रकार किसी प्रदेश या देश या मानचित्र भी सादृश्य के आधार पर ही अपने संकेतार्थ को व्यक्त करता है।

d) Technical Translation

Ans. Technical translation is a type of specialised translation involving the translation of documents produced by technical writers (owner's manuals, user guides, etc.), or more specifically, texts which relate to technological subject areas or texts which deal with the practical application of scientific and technological information.

Technical translation is a translation of empirical/descriptive texts written in the context of scientific or technological disciplines. As a matter of fact, any specialist field, from anthropology to zymurgy via banking, history numismatics and yachting, has its own

technical register, its own jargon, its own genre-making characteristics, with which translators should be familiar if they are to produce convincing TTs in the appropriate field.

तकनीकी अनुवाद

उत्तर– तकनीकी अनुवाद प्रक्रिया में मूल भाषा की विषय-वस्तु के सभी शब्दों का महत्त्व होता है, लेकिन कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जिन्हें अनुवादक नजरअंदाज कर सकता है, लेकिन ऐसे शब्द तकनीकी नहीं, बल्कि सामान्य भाषा के शब्द होते हैं। संकल्पना का आशय समझाने वाले तकनीकी शब्दों का अनुवाद तो अवश्य ही किया जाना चाहिए, क्योंकि उनके ताने-बाने से ही संकल्पना पूरी तरह से उजागर होती है। तकनीकी अनुवाद के भी साहित्य सृजन होने के कारण, इसमें भी शैली की सरलता और रोचकता का अपना महत्त्व है। अनुवाद में चाहे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष शैली का प्रयोग हो या कर्त्त वाच्य अथवा कर्म वाच्य में उसका प्रस्तुतीकरण हो, शैली का बराबर निर्वाह किया जाना चाहिए। जी.पी.एच. की पुस्तकों का मुख्य उद्देश्य ज्ञान के साथ-साथ अच्छे नम्बर दिलाना है।

विश्वभर में ज्ञान-विज्ञान की चेतना ने मानवीय भावनात्मक और ज्ञानात्मक संवेदना को न केवल बदला है, बल्कि इससे प्राप्त ज्ञान ने समाजशास्त्र को एक से दूसरे देश की सीमा तक पहुँचाया है। अनुवाद का उल्लेखनीय योगदान तकनीकी सहित विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में मिलता है। वस्तुतः अनुवाद (अनु + वाद) पुनः कथन या बाद वाला कथन है। यह उसी भाषा में अथवा किसी दूसरी भाषा में हो सकता है। तकनीकी साहित्य के अनुवाद में मूल सामग्री के प्रस्तुतीकरण का बहुत महत्त्व है। यह शैली व्यक्ति या अनुवादक के अनुसार बदल सकती है। तकनीकी अनुवाद में विषय-वस्तु को मुख्य मानना ही श्रेयस्कर है। एक भाषा से दूसरी भाषा में पूर्ण अनुवाद करना संभव नहीं, क्योंकि हर भाषा की अपनी विशिष्टता होती है, पर अनुवादक को सदैव ध्यान रखना चाहिए कि अनुवाद मूल कृति का प्रतिबिंब हो। देखा जाए तो तकनीकी शब्दावली की कसौटी अनुवाद ही है, क्योंकि मूल भाव को दूसरी भाषा में उसकी तकनीकी शब्दावली के उपयुक्त चुनाव से ही संप्रेषित किया जा सकता है।

e) Equivalence

Ans. The comparison of texts in different languages inevitably involves a theory of equivalence. Equivalence can be said to be the central issue in translation although its definition, relevance and applicability within the field of translation theory have caused heated controversy, and many different theories of the concept of equivalence have been elaborated within this field in the past fifty years.

Vinay and Darbelnet the innovative theorists view equivalence-oriented translation as a procedure, which “replicates the same situation as in the original, whilst using completely different wording”. They also suggest that, if this procedure is applied during the translation process, it can maintain the stylistic impact of the SL text in the TL text. They conclude by saying that “the need for creating equivalences arises from the situation, and it is in the situation of the SL text that translators have to look for a solution”. Indeed, they argue that even if the semantic equivalent of an expression in the SL text is quoted in a dictionary or a glossary, it is not enough, and it does not guarantee a successful translation.

‘Equivalent’ does not mean ‘identical’. Two or more things are said to be identical when they are exactly the same in every detail. The phenomenon of equivalence can occur between two non-identical objects when they show similarity in respect of size, function or value. We will illustrate this concept of equivalence by drawing examples from our day-to-day experience and from the field of language.

A piece of cloth and a piece of wood are two distinct objects, yet they can be equivalent in size if both objects have the same measurement. A yard, a foot and an inch are different units of measurement because they differ in size. However, based on the similarity of function and value, it can be said that a yard is equivalent to three feet or thirty-six inches. Similarly, based on the use and function, one can say that a good quilt is equivalent to at least three blankets. Two things can be dissimilar in some respect but may be equivalent in some other respect. For example, a piece of cloth and a piece of wood can be different in size, use, function, and yet they may be equivalent in value, i.e. in respect of their cost. What is true of material objects like cloth and wood, quilt and blankets or yard, foot and inch, is equally true of verbal objects. Verbal objects (a word, sentence and text) can be said to possess properties of size, function and value.

लोप और वृद्धि

उत्तर– कोई भी दो भाषाएँ शब्दावली और व्याकरण में बिल्कुल एक जैसी नहीं होतीं। दो भाषाओं में यही वह असमानता है, जो अनुवाद प्रक्रिया में लोप और वृद्धि का मूल कारण बनती है। दो भाषाओं से संबंधित दो अभिव्यक्तियों को व्याकरणिक कार्य, अर्थ-निरूपण या संप्रेषणीय भाव के आधार पर समतुल्य बना सकते हैं। फिर भी, अभिव्यक्ति के ऐसे कई रूप हैं जो अनुवाद प्रक्रिया में या तो लुप्त हो जाते हैं या उनमें वृद्धि हो जाती है।

उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के अभिवादन सूचक शब्द 'Good Morning', 'Good Evening' और 'Good Night' को लीजिए। अभिवादन घटक के साथ-साथ ये अभिव्यक्तियाँ समय का विशेष अर्थ देती हैं सुबह हम 'Good Morning' शाम को 'Good Evening' आदि कहते हैं। संप्रेषणीय भाव पर आधारित इसका हिंदी समतुल्य शब्द “नमस्ते” है, जो काल की सीमा को लाँघता है। अनुवाद का यह समतुल्य शब्द समय के पैमाने पर बनी मूल विषमता को संतुलित करता है। हिंदी के अभिवादन-सूचक शब्द अलग-अलग तरीकों से बोले जाते हैं। यहाँ हमारे पास कुछ अभिव्यक्तियाँ हैं जैसे “नमस्ते” और “राम-राम” तथा “पाँवलागी।” इनका प्रयोग वक्ताओं के सामाजिक स्तर से बँधा हुआ है। 'Good Morning/Evening' जैसे अंग्रेजी के समरूप अभिवादन-सूचक शब्दों के साथ इन्हें रखने का अर्थ है कि इस भाषा के प्रयोग करने वाले लोगों के सामाजिक श्रेणी-क्रम पर बनी मूल विषमता को केवल संतुलित करना।

स्तर के दोनों मामलों में हमें सूचना का लोप मिलता है। अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद में “समय” के बारे में कोई सूचना नहीं है, जबकि हिंदी से अंग्रेजी अनुवाद में “सामाजिक स्तर” की सूचना गायब है। अनुवादक को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि स्रोत-भाषा की अभिव्यक्ति के लिए लक्ष्य-भाषा की अभिवादन-सूचक अभिव्यक्ति को प्रतिस्थापित करते समय लक्ष्य-भाषा पद्धति के अभिप्राय को भी रूपांतरित करना होगा। मान लीजिए, नमस्ते के स्थान पर 'Good Morning' अथवा 'Good Night' अनुवाद किया तो इसका अर्थ यह हुआ कि पाठ में “समय” भी जोड़ दिया गया है जो मूल रूप से विद्यमान नहीं था। यह अर्थ में “वृद्धि” है।

Q4. What are the types and features of non-literary translation.

Ans. ***Types of Non-Literary Translation***

Non-literary translation may be of different types. We may broadly speak of technical, journalistic, commercial and official translation. There is also a category of terminological translation, which cuts across all these types. In technical translation, we include not only translation of scientific texts from medicine, engineering, physics, chemistry and mathematics but also translation from social sciences such as psychology, sociology, history, anthropology, linguistics, etc. Journalistic translation will include translation of news, human interest stories, editorials for all kinds of mass media including radio and TV. Under commercial translation, we may include translation of advertisements, notices and informative literature of all kinds, for example, information for tourists, publicity materials and instruction manuals. Official translation consists of legal, diplomatic and military work. It also includes interpreting, a task, which involves a native-like control on both, the languages involved.

Features of Non-Literary Translation

These are several important features, which distinguish literary and non-literary translation.

• A non-literary translation is addressed to a specific section of society. A poem or a short story may be read by every literate member of the target group but translation of scientific or an official text is used by the specific group for which it is meant.

• A non-literary translation is generally done only once. A play of Shakespeare or Kalidas may be translated afresh by every age but a science or social science text will generally be translated only once. In fact, one of the major reasons to translate non-literary texts is to overcome the gaps that may exist in the cumulative knowledge of the target language group.

• Translators of non-literary texts need to know not only the two languages involved but also the subject itself. Unless we know physics well, for example, it will be difficult for us to translate a physics text competently.

• Non-literary translation often involves introducing a new terminological and conceptual machinery in the target language. The sources a translator of non-literary texts must explore to coin appropriate terms is indeed a very challenging task.

• A non-literary text makes far greater demands in terms of reproducing the original as sincerely as possible.

गैर–साहित्यिक अनुवाद के प्रकार और वि" ाशताएँ बताईये।

उत्तर– ***गैर–साहित्यिक अनुवाद के प्रकार–गैर***–साहित्यिक अनुवाद भिन्न–भिन्न प्रकार के होते हैं। व्यापक रूप में हम टेक्नीकल, पत्रकारिता, कमर्शियल तथा ऑफिशियल अनुवाद कह सकते हैं। पारिभाषिक शब्दावली विषयक अनुवाद की भी एक श्रेणी होती है, जो कि इन सभी प्रकारों से पृथक होती है। टेक्नीकल अनुवाद में हम केवल चिकित्सा, इंजीनियरिंग, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान एवं गणित से लिए गए

वैज्ञानिक विषयों को ही शामिल नहीं करते हैं, बल्कि सामाजिक विज्ञान जैसे कि मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, इतिहास, मानवशास्त्र, भाषा-विज्ञान आदि से भी अनुवाद करते हैं। पत्रकारिता संबंधी अनुवाद में समाचारों मनुष्यों की पसंद की कहानियों, रेडियो एवं टी.वी. सहित सभी प्रकार के संचार मीडिया के लिए संपादकीय का अनुवाद सम्मिलित होता है। कमर्शियल अनुवाद के अंतर्गत हम विज्ञापनों, नोटिसों तथा सभी प्रकार के सूचनात्मक साहित्य को शामिल कर सकते हैं, उदाहरणार्थ–पर्यटकों के लिए जानकारी, प्रचार सामग्री एवं निर्देश पुस्तिकाएँ। ऑफिशियल अनुवाद में कानूनी, राजनयिक एवं सेना संबंधी कार्य शामिल होते हैं। इसमें किसी काम को समझाना शामिल होता है, जिसमें दोनों संलग्न भाषाओं पर देशी भाषा की भाँति नियंत्रण होता है।

गैर-साहित्यिक अनुवाद की विशेषताएँ– ऐसी कई विशेषताएँ हैं जो गैर-साहित्यिक अनुवाद को साहित्यिक अनुवाद से पृथक करती हैं–

- एक गैर-साहित्यिक अनुवाद समाज के एक विशेष वर्ग को संबोधित करता है। एक कविता या लघु-कथा लक्षित समूह के किसी भी शिक्षित सदस्य द्वारा पढ़ी जा सकती है, किंतु वैज्ञानिक या ऑफिशियल सामग्री का अनुवाद केवल उसी विशिष्ट समूह द्वारा पढ़ा जा सकता है, जिसके लिए वह बनाया जाता है।

- एक गैर-साहित्यिक अनुवाद आमतौर पर केवल एक बार किया जाता है। शेक्सपियर या कालिदास के किसी नाटक का अनुवाद हर युग में एक नए रूप में किया जा सकता है, किंतु विज्ञान या सामाजिक विज्ञान की विषय-सामग्री का अनुवाद आमतौर पर केवल एक बार किया जाता है। वास्तव में गैर-साहित्यिक सामग्री के अनुवाद का एक मुख्य कारण-लक्षित भाषा-समूह के संचित ज्ञान में मौजूद दूरियों को मिटाना है।

- गैर-साहित्यिक सामग्री के अनुवादकों के लिए केवल संलग्न दो भाषाओं का ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि स्वयं उस विषय का ज्ञान होना भी जरूरी है, उदाहरणार्थ–जब तक हमें भौतिक-विज्ञान का ज्ञान नहीं होगा, तब तक हमारे लिए भौतिक-विज्ञान की विषयवस्तु का ठीक-ठाक अनुवाद करना कठिन होगा।

- गैर-साहित्यिक अनुवाद में लक्षित भाषा में प्रायः नए पारिभाषिक शब्दों तथा अवधारणात्मक मशीनरी का परिचय शामिल होता है। किसी गैर-साहित्यिक विषय-वस्तु का अनुवाद करने के लिए अनुवादक को प्रयोग हेतु स्रोत से ठीक-ठीक शब्दों को खोजना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

- गैर-साहित्यिक विषयवस्तु के अनुवाद के लिए यथासंभव गंभीरतापूर्वक (समझदारी से) मूल रूप में पुनर्निर्माण के अर्थों में अपेक्षाएँ बहुत अधिक होती हैं।

Q 5. Explain the different steps in the process of poetry translation.

Ans. The translator's primary responsibility is to make a poem that although it is a translation of a poem existing in a different language, exists and takes an unobtrusive place in the contemporary poetic tradition of the new language. The translator, in this sense, crosses

linguistic and cultural barriers and involves himself, in a leap of adaptation, in the formulation of a parallel though freely existing poem.

To accomplish this, the translator, as he makes his translation, searches for literal equivalents, which "work" to ensure that the translation is "true" to the original. In those instances in which the effect of the literal is not adequate to the translator's eye and ear, or if the literal seems actually to detract from the new poem, "affective equivalents" must be found which, when substituted for the literal, work to ensure that the new poem is self-sustaining and does not "sound like a translation".

The translation-maker's primary duty is towards the new poem, which through the process of translation, "becomes" the translator's poem and not just a transliteration of the original poet's work. In this view, the translator is active and not passive; an originator and not a transporter; a transformer and creator, not just some drudge, who has dictionary in hand, roots for and writes down linguistic equivalents.

The translation-maker's voice in the process of translation making is as important as the voice of the original poet. The translator is modulator and interpreter of text, a shaper and a sound giver. The translation in some ways, thus, borders on being a kind of paralanguage. It is not just a "translation" but the translator's poem, an artifact to be considered separately as a product of artistic creation and not compared as a word-for-word rendering or some sort of recreated exoskeleton or linguistic mold. The translator, in this view, is an artist equal to the original poet.

If we try to keep the rhyme and rhythm of the original, we might distort the syntax and harm the sense. We must try to balance all these elements as far as possible, if we wish to render the TL version effective. Once the first draft is ready, we need to read it aloud and discuss it with those who understand poetry, if possible. One test that will help us to judge the quality of our translation is that if the translation reads like a translation, we have failed somewhere, but if our translated poem reads like an original, we know we have done a good job. For example, there are two versions of the poem 'The Rustle of Acacias' by Joseph Brodsky and translated from Russian into English by Daniel Weissbort.

Here is the first draft, sent after several revisions to the poet Brodsky:

THE RUSTLE OF ACACIAS

In Summer the cities empty out Saturdays and holidays

empty the capital of folk. The evenings weigh

heavy. You could lead an army in with

ease. And only when you call up one of your girlfriends on the phone,

who's not yet headed South and is still at home,

do you prick up your ears, hearing a loud guffaw and an

international drone,

and quietly you lay down the receiver: the town's been taken:

the government

has fallen: red stop lights are more and more evident.

Joseph Brodsky's letter about 'The Rustle of Acacias'

Dear Danny,

There are lots of things to be changed in The Rustle of Acacias.

(1) Watch the metre. If to use the original's beat, the first line should go something like:

In Summer the cities get empty. Saturdays, holidays 'Weigh' and 'ease' don't rhyme. Basically, if you are going to use a half-rhyme, do it in the second line of the triplet. Never in the first or in the third. Use the phone/home/drone model.

(2) The first line is by far too long. Also, I am not so sure that 'government' rhymes with 'more evident'. After incorporating the suggestions, Daniel's final version reads:

THE RUSTLE OF ACACIAS

Summer time, the cities empty. Saturdays, holidays

drive people out of town. The evenings weigh

you down. Troops could be marched in at even pace.

And only when you call a girlfriend on the phone,

who's not yet headed South and is still at home,

do you prick up your ears-laughter, an international drone-

and softly lay the phone down again: the city's fallen, the regime

has changed, more and more stop lights gleam.

(from Translating Poetry, Daniel Wecssbort ed.) London: Macmillan, 1989)

Even the best of us must revise and re-revise and we must then be prepared to refine our drafts.

कविता के अनुवाद के विभिन्न चरणों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर– काव्यानुवादक सृजन की दोहरी प्रक्रिया से गुजरने के बाद भी सामान्यत: इसी निष्कर्ष पर पहुँचता है कि उत्कृष्ट स्तर वाले साहित्यिक गौरव-ग्रंथों का अनुवाद मूल की कला और सौंदर्य को उपयुक्त रूप में

अक्षुण्ण रखते हुए करना लगभग असंभव कार्य है। गद्य साहित्य का अनुवाद तो फिर भी समतुल्यता की कसौटी पर कुछ संभव हो पाता है, किंतु काव्य का अनुवाद तो पूर्णत: यथावत् या समतुल्य कर पाना असंभव ही है। काव्य में शब्दों के भीतर बसा संस्कारगत निहितार्थ तो महत्त्वपूर्ण होता ही है, उनकी ध्वन्यात्मकता, कथ्यगत भाव एवं विचारों का यथावत् रूपांतरण तथा कविता या रचना का संरचनात्मक-वैशिष्ट्य भी अत्यंत विचारणीय होता है। काव्यानुवाद की प्रक्रिया चार चरणों में पूरी होती है, जो निम्न हैं–

(1) शब्द संस्कार एवं शब्द चयन– *स्रोत*-भाषा के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक संदर्भ के साथ-साथ समसामायिक स्थिति और स्थानीय परिवेश के कारण शब्द अपनी अर्थपरक प्रकृति में बहुस्तरीय होते हैं। अर्थात् किसी भी भाषा के शब्दों की अपनी विशिष्ट प्रकृति होती है, जिसमें उनके एक या एकाधिक अर्थों को या उनकी बहुस्तरीय छायाओं को देख सकते हैं। जैसे–

रहिमन **पानी** राखिए, बिन पानी सब सून,

पानी गए न ऊबरे, **मोती, मानस, चून**।

रहीम के इस दोहे में **"पानी"** के तीन अर्थ बताए गए हैं, जिन्हें **मोती, मानस** तथा **चून** के परिप्रेक्ष्य में दर्शाया गया है। जिसके तहत मोती के परिप्रेक्ष्य में यह चमक या आभा है, मानस के परिप्रेक्ष्य में यह इज्जत या सम्मान है तथा चून के परिप्रेक्ष्य में यह जल है। इन तीनों के लिए पानी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, परंतु "पानी" शब्द के इन संस्कारगत अर्थों को संदर्भ विशेष में ही समझा जा सकता है। इसलिए अनुवादक को सभी शब्दों में निहित उनके संस्कारगत अर्थ को देख-समझ कर ही अनुवाद करना चाहिए। जैसे "जल" पूजा के लिए प्रयुक्त होता है और "पानी" सामान्य बोलचाल में पीने के लिए। "अक्षत" पूजा में काम आने वाले चावल हैं, जबकि सामान्यत: यह भिन्न है।

इसी आधार पर अनुवादक को शब्द चयन भी करना चाहिए। यह वास्तव में काव्यानुवाद की निजी क्षमता पर ही निर्भर करता है। शब्द बोलचाल की भाषा के हों या साहित्यिक, शब्द-मैत्री का ध्यान कैसे रखा जाए। शब्दानुवाद किया जाए या भावानुवाद, शब्द की भीतरी शक्ति को किस गहराई से समझा और आंका जाए–आदि कितने ही प्रश्नों पर विचार कर अनुवादक को अपनी यात्रा तय करनी होती है। चूँकि हर शब्द का अपना एक इतिहास, परिवेश, परंपरा और आवेग होता है, इन सबको देख-विचार कर ही अनुवादक उन्हें चुनता है।

(2) कथ्य-निर्वाह: अनुभूति एवं विचार के परिप्रेक्ष्य में– *मूल* रूप में कविता एक संभावना होती है और कथ्य काव्य का मूल या प्राण होता है। इस प्रकार कवि अपनी चित्र-वृत्ति की अभिव्यक्ति के लिए अनेक विषयों, प्रसंगों, चरित्रों, घटनाओं, व्यक्तियों और परिवेशों का सहारा लेकर अपना मंतव्य सामने लाता है। इन सभी के सम्मिश्रण से वह किसी कृति का निर्माण कर सृजक या कवि कहलाता है। अत: काव्य में स्थूलत: कथा–तत्त्व चरित्र-चित्रेण विचार तत्त्व तथा भाव तत्त्व प्रधान होते हैं। काव्यानुवाद को काव्य कृति के इन चारों तत्त्वों का पूरी सावधानी से रूपांतरण करना होता है। भाव और विचार की समतुल्य प्रस्तुति काव्यानुवादक के लिए एक खास चुनौती बन कर उभरती है।

भावों और मनोवेगों को, रसास्वादन करती मानवीय सहृदयता को तथा मार्मिक स्थलों की भावपूर्ण प्रस्तुति को रूपांतरित करना भी दु:साध्य कार्य है। हिंदी में अनुवादकों ने इस दिशा में सामान्यत: कृतिककरों के भाव-सरोवर में अवगाहन करते हुए तुल्य-रस-स्थिति के सृजन को ही अपनाया है। कीट्स के काव्य लोक में भाव-विचरण करने वाले अनुवादक कवि श्री यतेन्द्र कुमार का यह अनूदित उदाहरण–द्रष्टव्य है जहाँ वे प्रेम की कोमल भावनाओं को बारीकी से पकड़ने का सफल प्रयास करते हैं–

मूल–

With every morn their love grew tenderer,

With every eve deeper and tenderer still,

He might not in house, field or garden stir,

But his full shape would all his seeing fill.

अनुवाद–

हर प्रभात के साथ प्रेम उनका होता था कोमलतर,

हर संध्या के साथ, और गंभीर, और भी यह कोमल,

चाहे घर में, या कि खेत, उपवन में ही वह रहा विहर,

प्रिय-मूर्ति ही उसके नयनों के समक्ष रहती प्रतिपल।

–श्री यतेन्द्र कुमार

अत: हर्ष, शोक, उल्लास, उन्माद, चिंता, लज्जा तथा पीड़ा आदि कई मर्मस्पर्शी भावों का आत्मीकरण करके ही दूसरी भाषा में रूपांतरण किया जा सकता है। तभी अनुवादक मूल की सी भाव-प्रतिभा का प्रतिस्थापन कर पाता है।

(3) संरचनात्मक विशिष्टता–कविता की संरचना अन्य विधाओं की अपेक्षा विशिष्ट होती है। इसमें लयात्मकता होती है और छंद विधान की विशिष्ट भूमिका रहती है। काव्यानुवाद के अंतर्गत अनुवादक को लक्ष्य एवं स्रोत भाषा के संरचनात्मक गठन का भी पूरा ध्यान रखना होता है। प्रत्येक भाषा की अपनी एक विशिष्ट संरचना होती है और उसी आधार पर कवि या साहित्यकार सृजन करता है। अनुवाद में अधिकांशत: यह संरचनात्मकता बाधक बनती है। भाषा की प्रकृति अगर अनुवाद में बदलती जान पड़े तो सौंदर्य क्षीण होने लगता है। इसी प्रकार विरामादि चिह्नों की प्रकृति एवं स्थिति का भी अनुवादक को पूरा ध्यान रखना चाहिए। दो भाषाओं की संरचनागत भिन्नता कविता के सूक्ष्म अर्थ तथा भाव दृष्टि को प्रभावित करती है और इसी दिशा में अनुवादक को सावधानी बरतनी होती है। जॉन मिल्टन की कृति को देखिए–

Which shall I first bewail,

The bondage or lost sight

Prison within Prison,

Inseparably dark?

मिल्टन की इस रचना का हरिवंश राय बच्चन द्वारा अनुवादित रूप–

पहले किस पर अश्रु बहाए,

बंदी या अंधा होने पर,

बंदीगृह के भीतर बंदीगृह तेरा,

रखता है संपृक्त जिन्हें यह घना अंधेरा।

साहित्यकार हरिवंश राय बच्चन ने इस कृति की लय को मूल पाठ के समान बनाए रखने का प्रयास किया है, लेकिन वह पूर्णतया प्राणवान साबित नहीं हो पाई है।

(4) आगत शब्दों का अनुवाद–काव्य रचना के अनुवादक को कविता पाठ में आए विदेशी शब्दों, पदबंधों या उपवाक्यों आदि का अनुवाद भी अत्यंत सोच-समझ कर तथा रच-पच कर ही करना चाहिए क्योंकि अंग्रेजी शब्दों, वाक्यांशों या मुहावरों का प्रयोग अनुवाद के माध्यम से करना अत्यंत जटिल कार्य है। हालाँकि हिंदी में ऐसे बहुत से प्रयोग किए भी गए हैं तथा वे मान्य एवं प्रचलित भी हुए हैं।

जैसे–Golden Touch–सुनहरे स्पर्श, Broken heart–भग्न-हृदय, Golden dream–स्वर्ण स्वप्न, Heavenly light–स्वर्गीय प्रकाश, Dreamy smile–स्वप्निल मुस्कान तथा Silvery–रूपहले आदि।

इसी तरह हिंदी कविता में बहुत से अंग्रेजी प्रयोगों को यथावत रखने के उदाहरण भी देखने को मिलते हैं। ऐसी स्थिति तब होती है, जब अनुवादक मूल शब्द का लक्ष्य भाषा में उत्तम प्रतिशब्द नहीं ढूँढ़ या बना पाता। इस स्थिति में वह उसे उसी प्रचलित रूप में प्रयुक्त कर देता है।

जैसे–"उसकी फाइल सी भरी आँखों में", "अस्थिर मन सा रेलवे का एक वेटिंग रूम" तथा "यदि स्त्रियाँ शिक्षा पातीं तो, परदा सिस्टम होता दूर" – इसी तरह के प्रयोग हैं।

काव्यानुवाद के प्रकार–काव्यानुवाद की प्रक्रिया में अनुवादक पहले चरण में पाठक प्रतिपाद्य को ग्रहण करता है और फिर उस भाव को लक्ष्य-भाषा में संप्रेषित कर दोहरी यात्रा तय करता है। काव्य में मात्र भाषा के ही अनुवाद की समस्या मुख्य नहीं होती, उसका शब्द-चयन, अलंकार विधान, छंद योजना, लाक्षणिक एवं नाद-सौंदर्य आदि कई चुनौतियाँ अनुवादक के सामने खड़ी रहती हैं। इस आधार पर कविता का अनुवाद भी कई प्रकार का हो जाता है। "भावानुवाद की पद्धति एक प्रकार से मूल रचना के समानांतर नवीन-सृजन

(Parallel Re-creation) है, लेकिन दोनों (मूल और अनुवादित पाठ) एक न होकर एक-सी होती हैं। यह एकता भाव-सामग्री की दृष्टि से होती है। इसमें एक आशंका यह होती है कि अधिकतर मूल कवि के रचनात्मक स्वरूप का जिज्ञासु पाठक के लिए कोई अनुमान नहीं हो पाता तथा मूल कवि की ऐसी देन से जिससे हमारी कविता अलंकृत और अभिव्यंजना-समृद्ध हो सकती है, हम वंचित रह जाते हैं। यह सच है कि ऐसी वस्तु का बाहुल्य नहीं होता, क्योंकि दोनों के समय और समाज के परिवेश भिन्न होते हैं तो भी ऐसे कुछ मुहावरे, बिंब, छंद तथा अन्योन्य उपकरण जिनमें मूल कवि के व्यक्तित्व का सार्वजनीन रूप प्रकट होता है, अवश्य अनुकूल होने चाहिएँ।

Q 6. Discuss the use of metaphors, similes, proverbs and idiomatic expressions in translation.

Ans. Literary texts also make use of proverbs and idiomatic expressions quite often for explaining things or phenomena more effectively and more precisely. These metaphors and similes, proverbs and idiomatic expressions are culture-specific. We discuss them with the help of concrete examples.

Similes and Metaphors

A metaphor is a comparison between two things that replaces the word or name for one object with that of another. Unlike a simile, a type of analogy that uses "like" or "as" (you shine like the sun!), a metaphor does not use these two words (a famous line from *Romeo and Juliet* has, Romeo proclaiming, "Juliet is the sun"). Metaphors are commonly used throughout all types of literature, but rarely to the extent that they are used in poetry.

Metaphors are used in all types of literature but not often to the degree they are used in poetry because poems are meant to communicate complex images and feelings to the readers and metaphors often state the comparisons most emotively. Here are some examples of metaphor from famous poems.

For example:

"Shall I Compare Thee to a summer's Day",

William Shakespeare was the best exponent of the use of metaphors. His poetical works and dramas all make wide-ranging use of metaphors.

In Hindi, especially poetry, a beautiful face, particularly that of one's beloved, is quite often referred to as a moon, where moon becomes a metaphor for the beloved's beauty: मेरा महबूब, मेरा चाँद which would literally mean 'my beloved, my moon'. Alternatively, a formal comparison is set up between the face and the moon where it becomes a simile: चाँद-सा चेहरा which literally means 'a face like a moon'. Sometimes the gait is compared to that of a doe as well: fgjuh&tSlh pky is a simile used quite often in Hindi literature.

Metaphors and similes are culture-specific which means comparisons between some sets of objects/phenomena in two different languages may not convey the sharing of a common quality.

Symbols

A symbol has complex meaning; it has not only "literal" meaning, but also additional meaning(s) beyond the literal. Sometimes the literal meaning of a symbol is absurd, so that the symbolic meaning over-rides and cancels out the literal meaning. A symbol may have more than one meaning. In fact, the most significant symbols do convey an indefinite range of meanings. Symbolism is often used by writers to enhance their writing. Symbolism can give a literary work more richness and colour and can make the meaning of the work deeper.

An owl, for instance, symbolises foolishness among speakers of Hindi while for speakers of English and many other European languages, it symbolises wisdom. In English, for instance, green colour symbolises envy or jealousy while the green colour symbolises no such feelings for speakers of Hindi. Blue symbolises royalty or aristocracy for speakers of English while there is no such equivalent colour-symbol in Hindi.

Proverbs and Idiomatic Expressions

An idiom is an expression that can be understood only as a whole and not by analysing its constituent parts. For example, if you know what 'kick', 'the' and 'bucket' mean, that won't help us to understand that 'kick the bucket' means 'die'. A proverb may or may not be idiomatic, but it expresses succinctly some form of philosophy, folk wisdom or advice. It is a sentence that usually evokes a sense of wisdom. While most of the time it can refer to a certain sense of wisdom, proverbs are mere expressions of truth based on common sense or practicality.

A translator must either find a proverb in the TL which has a similar meaning or s/he must paraphrase the expression. The latter, of course leads to a dilution of the effectiveness of the expression. For example, from Hindi: हाथी के दांत खाने के और, दिखाने के और is a proverb which is used very frequently in Hindi. Literally, it means that an elephant has two separate sets of teeth–one for eating and another for showing–off. It is used for a person who has double standards–one for public consumption and another for private action.

Idiomatic expressions are also word-structures where the meaning of the expression is quite different from the literal meaning of the constituting words. चुटकी लेना, for instance, is an expression which occurs in Prem Chands's *शतरंज के खिलाड़ी*. It means 'to have fun at someone's expense', while the literal meaning of the expression is non-sensical 'take snapping of fingers'. *आँखें दिखाना* is yet another popular idiomatic expression in Hindi which means 'to show temper' while its literal translation is 'to show eyes'.

रूपक, उपमा, मुहावरे तथा लोकोक्तियों का अनुवाद में किस तरह इस्तेमाल किया जाता है? विवेचना कीजिए।

उत्तर: साहित्यिक ग्रंथों में भी कहावतों और मुहावरों का प्रयोग अक्सर चीजों या घटनाओं को अधिक प्रभावी ढंग से और अधिक सटीक रूप से समझाने के लिए किया जाता है। ये रूपक और उपमाएं, कहावतें और मुहावरेदार अभिव्यक्ति संस्कृति-विशिष्ट हैं। हम ठोस उदाहरणों की मदद से उनकी चर्चा करते हैं।

<u>सिमील्स और मेटाफ़ोर्स</u>

एक रूपक दो चीजों के बीच तुलना है जो किसी वस्तु के लिए शब्द या नाम को दूसरे के साथ बदल देता है। एक उपमा के विपरीत, एक प्रकार की सादृश्यता जो "जैसे" या "जैसा" (आप सूरज की तरह चमकते हैं!) का उपयोग करते हैं, एक रूपक इन दो शब्दों (रोमियो और जूलियट की एक प्रसिद्ध पंक्ति, रोमियो की घोषणा, "जूलियट का उपयोग नहीं करता है) सूरज")। आमतौर पर सभी प्रकार के साहित्य में रूपकों का उपयोग किया जाता है, लेकिन शायद ही कभी वे कविता में उपयोग किए जाते हैं।

सभी प्रकार के साहित्य में रूपकों का उपयोग किया जाता है, लेकिन अक्सर उन्हें कविता में उपयोग नहीं किया जाता है क्योंकि कविताएं पाठकों और पाठकों के लिए जटिल छवियों और भावनाओं को संप्रेषित करने के लिए होती हैं और अक्सर उपमाओं की तुलना सबसे अधिक भावनात्मक रूप से की जाती है। यहाँ प्रसिद्ध कविताओं के रूपक के कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

<u>उदाहरण के लिए:</u>

"क्या मैं उनकी तुलना गर्मियों के दिन से करूंगा",

विलियम शेक्सपियर रूपकों के उपयोग का सबसे अच्छा प्रतिपादक था। उनके काव्यात्मक कार्य और नाटक सभी रूपकों का व्यापक उपयोग करते हैं।

हिंदी में, विशेष रूप से कविता, एक सुंदर चेहरा, विशेष रूप से किसी का प्रिय, जिसे अक्सर चंद्रमा के रूप में संदर्भित किया जाता है, जहां चंद्रमा प्रेमी की सुंदरता के लिए एक रूपक बन जाता है: मेरा महबूब, मेरा चाँद जिसका शाब्दिक अर्थ होता है 'मेरे प्रिय, मेरा चाँद'। वैकल्पिक रूप से, चेहरे और चंद्रमा के बीच एक औपचारिक तुलना स्थापित की जाती है जहां यह एक उपमा बन जाता है: चाँद – सा चेहरा जिसका शाब्दिक अर्थ है 'चंद्रमा जैसा चेहरा'। कभी-कभी गोट की तुलना एक डो के साथ भी की जाती है: हिरनी – जैसी चाल एक उपमा है जिसका हिंदी साहित्य में अक्सर उपयोग किया जाता है।

मेटाफ़ोर्स और उपमाएँ संस्कृति-विशिष्ट हैं, जिसका अर्थ है कि दो अलग-अलग भाषाओं में वस्तुओं / परिघटनाओं के कुछ सेटों के बीच तुलना एक सामान्य गुणवत्ता के बंटवारे को व्यक्त नहीं कर सकती है।

<u>प्रतीक</u>

एक प्रतीक का जटिल अर्थ है; इसका न केवल "शाब्दिक" अर्थ है, बल्कि शाब्दिक अर्थ से परे इसका अतिरिक्त अर्थ भी है। कभी-कभी किसी प्रतीक का शाब्दिक अर्थ बेतुका होता है, जिससे कि प्रतीकात्मक अर्थ ओवर-राइड और कैंसिल हो जाता है। एक प्रतीक में एक से अधिक अर्थ हो सकते हैं। वास्तव में, सबसे महत्वपूर्ण प्रतीक अर्थ की एक अनिश्चित सीमा को व्यक्त करते हैं। प्रतीकवाद का उपयोग अक्सर लेखकों द्वारा अपने लेखन को बढ़ाने के लिए किया जाता है। प्रतीकवाद एक साहित्यिक कार्य को अधिक समृद्धि और रंग दे सकता है और कार्य के अर्थ को गहरा कर सकता है।

उदाहरण के लिए, एक उल्लू, हिंदी के वक्ताओं के बीच मूर्खता का प्रतीक है, जबकि अंग्रेजी और कई अन्य यूरोपीय भाषाओं के वक्ताओं के लिए, यह ज्ञान का प्रतीक है। उदाहरण के लिए, हरे रंग का रंग ईर्ष्या या ईर्ष्या का प्रतीक है, जबकि हरा रंग हिंदी बोलने वालों के लिए ऐसी भावनाओं का प्रतीक नहीं है। ब्लू अंग्रेजी के बोलने वालों के लिए रॉयल्टी या अभिजात वर्ग का प्रतीक है, जबकि हिंदी में ऐसा कोई समान रंग-प्रतीक नहीं है।

<u>नीतिवचन और मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ</u>

एक मुहावरा एक अभिव्यक्ति है जिसे केवल एक पूरे के रूप में समझा जा सकता है और उसके घटक भागों का विश्लेषण करके नहीं। उदाहरण के लिए, यदि आप जानते हैं कि 'किक', '' और 'बकेट' का क्या मतलब है, तो यह समझने में हमारी मदद नहीं करेगा कि buck बकेट को किक करें 'का अर्थ है' डाई '। एक कहावत भले ही मुहावरेदार हो या न हो, लेकिन यह कुछ हद तक दर्शन, लोक ज्ञान या सलाह के रूप में व्यक्त होती है। यह एक ऐसा वाक्य है जो आमतौर पर ज्ञान की भावना को विकसित करता है। जबकि अधिकांश समय यह ज्ञान की एक निश्चित भावना का उल्लेख कर सकता है, नीतिवचन सामान्य ज्ञान या व्यावहारिकता के आधार पर सत्य की अभिव्यक्ति हैं।

एक अनुवादक को या तो TL में एक कहावत ढूंढनी होगी जिसका एक समान अर्थ हो या उसे अभिव्यक्ति को समझना चाहिए। उत्तरार्द्ध, निश्चित रूप से अभिव्यक्ति की प्रभावशीलता के कमजोर पड़ने की ओर जाता है। उदाहरण के लिए, हिंदी से: हाथी के दांत खाने के और, दिखाने के और एक कहावत है जिसका हिंदी में बहुत बार प्रयोग किया जाता है। शाब्दिक अर्थ है कि एक हाथी के दांतों के दो अलग-अलग सेट होते हैं-एक खाने के लिए और दूसरा दिखावा करने के लिए। इसका उपयोग ऐसे व्यक्ति के लिए किया जाता है, जिसके दोहरे मापदंड हैं- एक सार्वजनिक उपभोग के लिए और दूसरा निजी कार्रवाई के लिए।

मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ भी शब्द-संरचनाएँ हैं जहाँ अभिव्यक्ति का अर्थ निम्नलिखित शब्दों के शाब्दिक अर्थ से बिलकुल अलग है। उदाहरण के लिए चुटकी लेना, एक अभिव्यक्ति है, जो प्रेम चंद की 'क्रज असक खिलाडी' में है, जिसका अर्थ है 'किसी के खर्च पर मस्ती करना', जबकि अभिव्यक्ति का शाब्दिक अर्थ गैर-संवेदी है 'उंगलियों का तड़कना' '। आखें दिखाना अभी तक हिंदी में एक और लोकप्रिय मुहावरेदार अभिव्यक्ति है जिसका अर्थ है 'गुस्सा दिखाना' जबकि इसका शाब्दिक अनुवाद 'आँखें दिखाना' है।

Q7. Analyse the sentence structure of Hindi and English.

Ans. In English language, sentences are built around five basic patterns. These are Subject-Verb, Subject-Verb-Object, Subject-Verb-Adjective, Subject-Verb-Adverb, and Subject-Verb-Noun. English is an SVO (Subject-Verb-Object) language while Hindi is an SOV (Subject-Object-Verb) language.

For example:

We consider the following Hindi sentences first.

(1) महेश खा रहा है।

Mahesh eat -ing is

S O V

'Mahesh is eating'.

(2) महेश सुनीता को मार रहा है।

Mahesh Sunita hitting is

S O V

'Mahesh is hitting Sunita'.

In sentences (1) and (2), महेश is the subject noun phrase and it occurs in the INITIAL (FIRST) position in the sentence. The verb in both the sentences occurs in the FINAL (LAST) position. In sentence (2), lquhrk is the object noun phrase and dks is the (POSTPOSITION) that is attached to the object. So, the word order in Hindi is as follows:

Subject (S) → Object (O) →Verb (V)

Now we consider at the word order in English through the following sentences:

(3) Mahesh is playing.

(4) The boy is beating Sunita.

In the sentence Mahesh and the boy, which are the subject noun phrases occur in the (INITIAL) position and the verb in (3) occurs in the final position. While in the sentence (4), the object noun phrase occurs after the verb in the final position. Thus, the word order in English is:

SUBJECT (S) →VERB (V) →OBJECT (O) that is, **SVO**

Verbs such as मारना 'hit' in sentence (2) and 'beat' in sentence (4) are called transitive verbs because they permit an object. These verbs in English always require an object overtly whereas in Hindi and in other Indian languages, this is not the case.

For example, for a question in sentence (5), the answer must contain 'it' as in (6) or else it is ungrammatical.

(5) Did you buy the car?

(6) Yes, I bought it.

In contrast in Hindi, answer to question in (7), there is no need to be an overt object noun phrase as (8) illustrates:

(7) क्या आप ने गाड़ी खरीदी?

question word you car bought?

Did you buy the car?

(8) जी हाँ, मैंने खरीदी।

Yes, I bought.

In fact, to have an overt object in Hindi may look a bit awkward as (9) illustrates.

(9) जी हाँ, मैंने वह खरीदी।

Yes I it bought.

Sentence (9) may be appropriate if the speaker is pointing out to a car which is there on the spot.

It is interesting to note that we can use transitive verbs as intransitively in both languages in Hindi and English. For example:

(10) हम उस वक्त पढ़ रहे थे।

We that time were studying

'We were studying at that time.'

In normal word order in Hindi, the indirect object (IO) always come first and the direct object (DO) follows it. Thus, the order is: **IO→DO**

For example:

(11) रमेश संगीता को किताब देगा।

Ramesh Sangita to book will give

IO DO

'Ramesh will give a book to Sangita.'

In this sentence, the person who receives (recipient) is Sangita and the noun संगीता precedes the noun (किताब) 'book'.

In English, however, there are two word orders possible. For example:

(12) (a) Kavita will give Neha the book.

(Indirect object) (Direct object)

(b) Kavita will give the book to Neha.

(Direct object) (Indirect object)

Here, sentences (12 a) and (12 b) have the same meaning. In (a), the indirect object **precedes** the direct object. In (b), the direct **precedes** the indirect object. It is the order in (b) which is considered to be the normal basic words for non- verb-final languages such as English.

There is a type of verbs in Hindi as well as in English where the subject of an intransitive verb corresponds to the object of a transitive verb. For example:

(13) दरवाजा खुला।

door opened

'The door opened.'

(14) श्याम ने दरवाजा खोला।

Shyam door opened

'Shyam opened the door.'

In (13), the subject is **दरवाजा**, i.e. 'door' and that becomes the object in (14), i.e. **खुलना** 'to open'. The verb in sentence (14) is called the causative form of the verb in (13).

The special feature of Hindi and many other Indian languages is that in addition to the causative forms, these languages have another causative verbal form, which can take two objects. Such as:

(15) कविता ने संजय से दरवाजा खुलवाया।

Kavita Sanjay by door had (it) opened.

'Kavita made Sanjay open the door.'

In the sentence (15), the verb **खुलवाया** has two objects **दरवाजा** 'door' and **संजय**. Verbs such as **खुलवाना** are termed as second causatives. Some examples of the second causative are as follows:

सुलवाना 'to make someone put someone to sleep'

उबलवाना 'to make someone boil something'

गिरवाना 'to make someone drop something'

Interestingly, English does not have one single verb like Hindi, which will denote the second causative meaning.

Nature of the verb 'be' in Hindi and English

The verb (होना) **'to be'** in Hindi has the following forms in various tenses and persons. The two functions of the forms in set Ist below are to denote tense and denote existence or presence. The main function of the forms in set IInd below is to denote a process.

Set Ist

हूँ present tense, Ist person singular

है present tense, IInd & IIIrd person singular

हैं present tense, IInd & IIIrd person plural

था/थी past tense singular

थे/थीं past tense plural

Set IInd

हुआ past tense singular

हुए past tense plural

The forms of set Ist, हूँ/है/हैं/था/थी/थे/थीं have two functions to perform. When these occur with the main verb in sentences (16-18) below, they perform the function of carrying the tense.

(16) रामू जा रहा है।

Ramu go -ing is (tense maker)

(17) स्नेहा गा रही थी।

Sneha sing -ing was (tense maker)

'Sneha was singing.'

(18) बच्चे खेल रहे थे।

children play -ing were (tense maker)

'The children were playing.'

The forms of set IInd denote a process when they occur as a main verb. In such cases too, the forms of set Ist also occur as carriers of tense makers. For example:

(19) बारिश हो रही है।

Rain occur -ing is

'It is raining.'

English too has several forms of the verb 'be' and these have similar function as in Set Ist of Hindi, i.e. they also carry the tense and denote existence or presence. These forms are:

am Ist person singular, present tense

are IInd person singular, Ist, IInd, IIIrd person plural, present tense

is IInd person singular, present tense

was singular, past tense

were plural, past tense

Corresponding to set IInd of Hindi, there is no form of the verb 'be' in English. In English, there are action verbs such as happen, take place, occur, etc. For example:

(20) The killing occurred at mid-night.

The verb 'to be' (होना) is also used in the possessive construction in which possession is expressed. For example:

(21) हमारे पास बहुत पैसा है।

near/at us a lot of money is

'We have a lot of money.'

(22) अनीता की चार बेटियाँ हैं।

Anita of four girls are

'Anita has four girls.'

In order to have a comprehensive idea of Hindi and English sentence structure, we shall consider at the position of occurrence of the dependent or subordinate clause in a sentence. By subordinate clause, we mean, a clause that stand on its own.

For example:

(23) हमने सुना कि वे लोग इस साल विलायत से वापस आएँगे।

We heard that those people this year abroad from will return

'We heard that those people would return from abroad this year.'

In example (23), कि in the beginning is the subordinate clause and it occur by itself. That is why such clauses are called dependent clauses.

अंग्रेजी तथा हिन्दी की वाक्य–संरचना का वि" लेशण कीजिए।

उत्तर– कुछ लिखते अथवा बोलते समय शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है, शब्दों के इसी व्यवस्थित समूह से प्राप्त अर्थ को वाक्य कहते हैं। किसी भी भाषा की महत्तम इकाई वाक्य होता है, जिसमें शब्दों का प्रयोग एक क्रम में किया जाता है। अर्थात् वाक्य शब्दों का एक ऐसा व्यवस्थित समूह है, जिसमें पूर्ण अर्थ देने की सामर्थ्य होती है। अंग्रेजी और हिंदी के वाक्यों का मूल स्वरूप निम्न प्रकार है–

(1) s v

The Boy came

लड़का आया।

इस वाक्य में दो भाग हैं। एक भाग कर्त्ता के रूप में सूचना देता है, जैसे–लड़का; दूसरा भाग क्रिया के बारे में बताता है, जैसे–आया।

हिंदी के वाक्य विन्यास की प्रकृति कर्त्ता+कर्म+क्रिया है (राजू आम खाता है), जबकि अंग्रेजी वाक्य विन्यास की प्रकृति कर्त्ता+क्रिया+कर्म है (Raju eats Mangoes)

(2) s v o

Raju eats mangoes

"राजू" "खाता है" "आम"

s o v

राजू आम खाता है।

यहाँ वाक्य (1) में अंग्रेजी तथा हिंदी दोनों में ही शब्दक्रम (sv) "कर्त्ता+क्रिया" है, अर्थात् अकर्मक क्रिया में यह स्थिति होगी, लेकिन यदि क्रिया सकर्मक है तब स्थिति अंग्रेजी में "कर्त्ता-क्रिया-कर्म" (svo) के रूप में होगी।

इसी प्रकार सामान्य शब्द-क्रम में द्विकर्मक (Ditransitive) वाक्यों को लिया जा सकता है–

(3) s v o o I gave money to a begger

"मैंने" "दिए" "पैसे" "को" "एक भिखारी"

s o o v

मैंने एक भिखारी को पैसे दिए

इस वाक्य से स्पष्ट होता है कि ऐसे वाक्यों में अंग्रेजी का शब्द क्रम "कर्त्ता+क्रिया+ मुख्यकर्म+गौणकर्म" होता है, जबकि हिंदी में यह "कर्त्ता+गौण कर्म+मुख्य कर्म+क्रिया" के रूप में रहता है, परंतु अंग्रेजी में दोनों कर्मों का क्रम बदल भी सकता है। इस प्रकार अंग्रेजी में ये दोनों वाक्य संभव हैं–

(4) (a) s v o o I gave the book to him.

(b) s v o o

I gave him the book.

यदि शब्द क्रम में हम विशेषणों को अपनाएँ तो हम पाएँगे कि अंग्रेजी तथा हिंदी दोनों में विशेषण उस संज्ञा से पहले आते हैं, जिनकी वे विशेषता बताते हैं। जैसे–

A s

(5) What a nice weather!

A s

कितना सुंदर मौसम है।

A s

(6) A beautiful girl is coming.

एक सुंदर लड़की आ रही है।

वाक्य (5) में "कितना सुंदर" एक विशेषण पदबंध है, जिसमें "सुंदर" शीर्ष है और "कितना" विशेषक है, परंतु जब विशेषण विधेय (Predicate) के रूप में प्रयुक्त होते हैं, तब दोनों ही भाषाओं में स्थिति विपरीत होती है। जैसे–

(7) **Weather** is **nice** today.

आज मौसम अच्छा है।

(8) This girl is beautiful.

यह **लड़की सुंदर** है।

(9) The Honest and intelligent person can do very good work.

ईमानदार और बुद्धिमान व्यक्ति बहुत अच्छे कार्य कर सकते हैं।

ये तीनों वाक्य "विधेय विशेषण" के उदाहरण हैं।

क्रिया विशेषण आमतौर पर हिंदी में क्रिया से पहले आते हैं, जबकि अंग्रेजी में बाद में।

उदाहरण के लिए–

(10) s v ad

Ram lives here.

s ad v

राम यहाँ रहता है।

v ad

(11) He works the whole Night

ad v

वह रात भर काम करता है।

अंग्रेजी में वाक्य के शुरू में is, did, have तथा do आदि लगाकर प्रश्नवाचक वाक्य बनाते हैं, जबकि हिंदी में 'क्या' शब्द वाक्य से पूर्व लगाया जाता है। अर्थात् अंग्रेजी तथा हिंदी दोनों के वाक्य क्रम में **प्रश्नवाचक अभिव्यक्ति** "क्या" वाक्य के प्रारंभ में आती है। उदाहरण के लिए–

q

(12) Has Manish gone to his friend's house?

q

क्या मनीष अपने दोस्त के घर गया है?

q

(13) **Do** you know something about him?

क्या आप उसके बारे में कुछ जानते हैं?

परंतु हिंदी में बल देने के लिए यह क्रम बदल सकता है, लेकिन अंग्रेजी में यह संभव नहीं। जैसे–

(क) मनीष **क्या** अपने दोस्त के घर गया है?

(ख) मनीष अपने दोस्त के घर गया है **क्या**?

इन वाक्यों में यदि शब्द क्रम को हम पदबंध (Phrase) के स्तर पर देखें तो पाएँगे कि अंग्रेजी में विशेषण पदबंध वाक्य के अंत में आता है, जबकि हिंदी में बीच में। जैसे–

(14) Manish is a man of **a generous nature**.

मनीष बहुत **उदार दिल का** व्यक्ति है।

(15) He has turban **made of silk**.

उसके पास **सिल्क की बनी** पगड़ी है।

इसी प्रकार **क्रिया विशेषण पदबंधों** को ले सकते हैं। अंग्रेजी में क्रिया विशेषण पदबंध क्रिया के बाद आते हैं, जबकि हिंदी में क्रिया से पहले। यथा–

(16) He spoke **more slowly** than before.

वह पहले से **ज्यादा धीमे** बोला।

(17) I'll talk with you **in a short time**.

मैं **थोड़ी देर में** आपसे बात करूँगी।

(18) He replied in a **very rude manner**.

उसने **बहुत कठोर अंदाज** में जवाब दिया।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अंग्रेजी और हिंदी की वाक्य-संरचनाएँ अपनी अलग-अलग सत्ता रखती हैं। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि अंग्रेजी में वाक्यों का शब्दक्रम हिंदी की अपेक्षा अधिक सुनिश्चित है, अर्थात् यदि शब्दों का क्रम बदल दिया जाए तो अंग्रेजी का वाक्य अव्याकरणिक हो जाएगा, जबकि हिंदी की वाक्य-संरचना "कर्त्ता–कर्म-क्रिया" के रूप में है, लेकिन विभिन्न संदर्भों में अनुमान के आधार पर शब्दक्रम बदल देने पर वाक्य अव्याकरणिक नहीं होता। उदाहरणार्थ–

s v o

(19) Mohan is reading a book.

s o v

मोहन किताब पढ़ रहा है।

(20) Is reading Mohan a book.

पढ़ रहा है मोहन एक किताब।

(21) A book is reading Mohan.

एक किताब पढ़ रहा है मोहन।

(22) A book Mohan is reading.

एक किताब मोहन पढ़ रहा है।

इन हिंदी वाक्यों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि शब्द क्रम बदलने से हालाँकि सभी वाक्यों में कुछ अर्थ भिन्नता आ जाती है (अर्थात् कहीं कर्त्ता पक्ष पर बल है, कहीं कर्म पक्ष पर कहीं क्रिया पक्ष पर), लेकिन हिंदी में ये वाक्य संभव हैं। वाक्य (20) में निहित अर्थ होगा–"मोहन पढ़ रहा है, कुछ और काम नहीं कर रहा।"

इसी प्रकार वाक्य (21) का अर्थ होगा–"मोहन किताब ही पढ़ रहा है, कुछ और नहीं।" (22) वाक्य की आंतरिक संरचना होगी–"किताब पढ़ने का काम मोहन ही कर रहा है, कोई और नहीं।"

अंग्रेजी की संरचना "svo" के आधार पर तथा हिंदी की सामान्य रूप से (शैलीगत विभेदों को छोड़कर) "sov" संरचना के स्पष्ट होने के साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि बहुत से व्याकरणिक घटक जैसे–पूर्वसर्ग-परसर्ग, विभिन्न क्रियाएँ, विशेषण, उपपद तथा अन्विति आदि इससे प्रभावित होते हैं।

Q 8. Translate the following words into Hindi:

निम्नलिखित भाब्दों का हिन्दी में अनुवाद करें।

a) glossary

Ans. शब्दावली

b) Reference

Ans. संदर्भ

c) Kinship

Ans:- नातेदारी

d) parasite

Ans:- परजीवी

e) Judicial

Ans. न्यायिक

f) Designation

Ans. पदनाम

g) astronomy

Ans:- खगोल-विज्ञान

h) Junior Scientist

Ans. कनिष्ठ वैज्ञानिक

i) Commissioner

Ans. आयुक्त

j) Vigilance Officer

Ans. सतर्कता अधिकारी